पोस्टर प्रदर्शनी

राहुल सांकृत्यायन के आह्वान को याद करो!

भागो नहीं

दुनया को बदलो!

राहुल सांकृत्यायन जीवनभर धार्मिक रूढ़ियों और पाखण्डों के विरुद्ध लड़ते रहे और जनता को शोषण-उत्पीड़न के विरुद्ध जागरूक करते रहे। इसीलिए समाज को धर्म और जाति के नाम पर बाँटने वाली शक्तियाँ आज भी उनके विचारों से डरती हैं!

आज जब धर्म और जाति के नाम पर लोगों को एक-दूसरे की जान का प्यासा बनाया जा रहा है,

तो राहुल की बात याद आती है:

राष्ट्र की एकता मंचों पर लम्बे-लम्बे भाषणों से नहीं होगी। इसके लिए हमें ठोस काम करना होगा। वह ठोस काम यही है कि देश के भीतर धर्म और जाति-भेद ने जितनी दीवारें खड़ी की हैं, उन्हें गिरा देना। हाँ, हिन्दू, मुसलमान, ईसाई या लामजहब होने से हमारे खान-पान, शादी-ब्याह में कोई रुकावट नहीं होनी चाहिए। ज़रूरत पड़ने पर इसके लिए हमें मजहब से भी लोहा लेने के लिए तैयार रहना चाहिए।

विज्ञान की जगह पोंगापन्थ को बढ़ाने, आगे बढ़ने के बजाय समाज को पीछे ले जाने की कोशिशों के इस दौर में

राहुल सांकृत्यायन के इन शब्दों को याद करना ज़रूरी है...

जिस जाति की सभ्यता जितनी पुरानी होती है, उसकी मानसिक दासता के बन्धन उतने ही पुराने होते हैं। भारत की सभ्यता पुरानी है, और इसलिए इसके आगे बढ़ने की राह में रुकावटें भी अधिक हैं। मानसिक दासता प्रगति में सबसे अधिक बाधक होती है। हमारे कष्ट, हमारी आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक समस्याएं इतनी अधिक और जटिल हैं कि हम तबतक उनका हल सोच नहीं सकते, जबतक हम साफ-साफ और सतर्कतापूर्वक इनपर सोचने का प्रयत्न न करें।

“जिस समाज ने प्रतिभाओं को जीते-जी दफनाना कर्तव्य समझा है और गदहों के सामने अंगूर बिखेरने में जिसे आनन्द आता है, क्या ऐसे समाज के अस्तित्व को हमें पलभर भी बर्दाश्त करना चाहिए?...— ऐसे समाज को जीने देना पाप है। इस पाखण्डी, धूर्त, बेईमान, जालिम, नृशंस समाज को पेट्रोल डालकर जला देना चाहिए।”

राहुल सांकृत्यायन

‘‘ऐसे समाज के लिए हमारे दिल में क्या इज़्ज़त हो सकती है, क्या सहानुभूति हो सकती है? बाहर से धर्म का ढोंग, सदाचार का अभिनय, ज्ञान-विज्ञान का तमाशा किया जाता है और भीतर से यह जघन्य, कुत्सित कर्म! धिक्कार है ऐसे समाज को!! सर्वनाश हो ऐसे समाज का!!!’’

– राहुल सांकृत्यायन

‘‘हिन्दुस्तान के इन धार्मिक झगड़ों को देखिये, तो आपको मालूम होगा कि यहाँ मनुष्यता पनाह माँग रही है। निहत्थे बूढ़े और बूढ़ियाँ ही नहीं, छोटे-छोटे बच्चे तक मार डाले जाते हैं। अपने धर्म के ‘दुश्मनों’ को जलती आग में फेंकने की बात अब भी देखी जाती है।’’

– राहुल सांकृत्यायन

“समाज ने पहले कमज़ोर मनुष्य की शक्तियों को सैकड़ों व्यक्तियों की एकता द्वारा बहुत बढ़ा दिया और तभी वह अपने प्राकृतिक और दूसरे शत्रुओं से त्राण पा सका, लेकिन आज उस समाज ने... अपने भीतर से ऐसे शत्रुओं को पैदा कर दिया है जिन्होंने कि उन प्राकृतिक और पाशविक शत्रुओं से भी अधिक मनुष्य-जीवन नारकीय बनाने का काम किया है।”

राहुल सांकृत्यायन

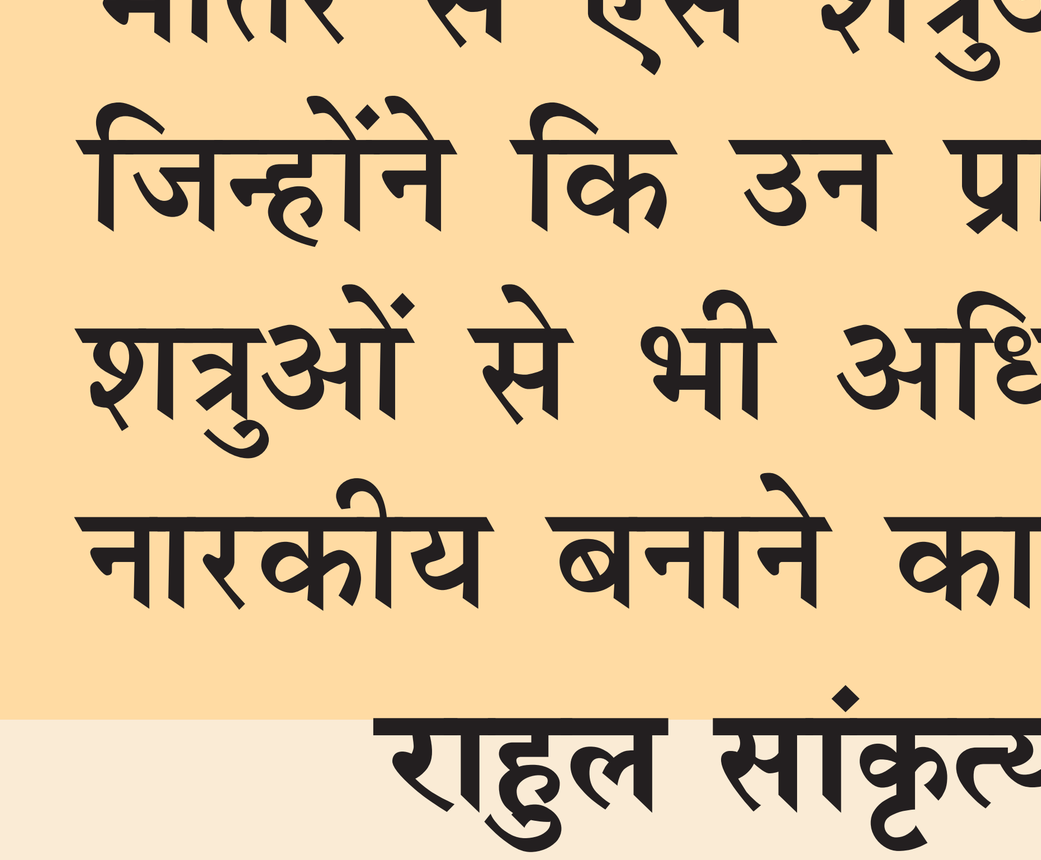

“हमें अपनी मानसिक दासता की बेड़ी की एक–एक कड़ी को बेदर्दी के साथ तोड़कर फेंकने के लिए तैयार रहना चाहिए। बाहरी क्रान्ति से कहीं ज़्यादा ज़रूरत मानसिक क्रान्ति की है। हमें आगे–पीछे–दाहिने–बायें दोनों हाथों से नंगी तलवारें नचाते हुए अपनी सभी रूढ़ियों को काटकर आगे बढ़ना होगा।”

राहुल सांकृत्यायन

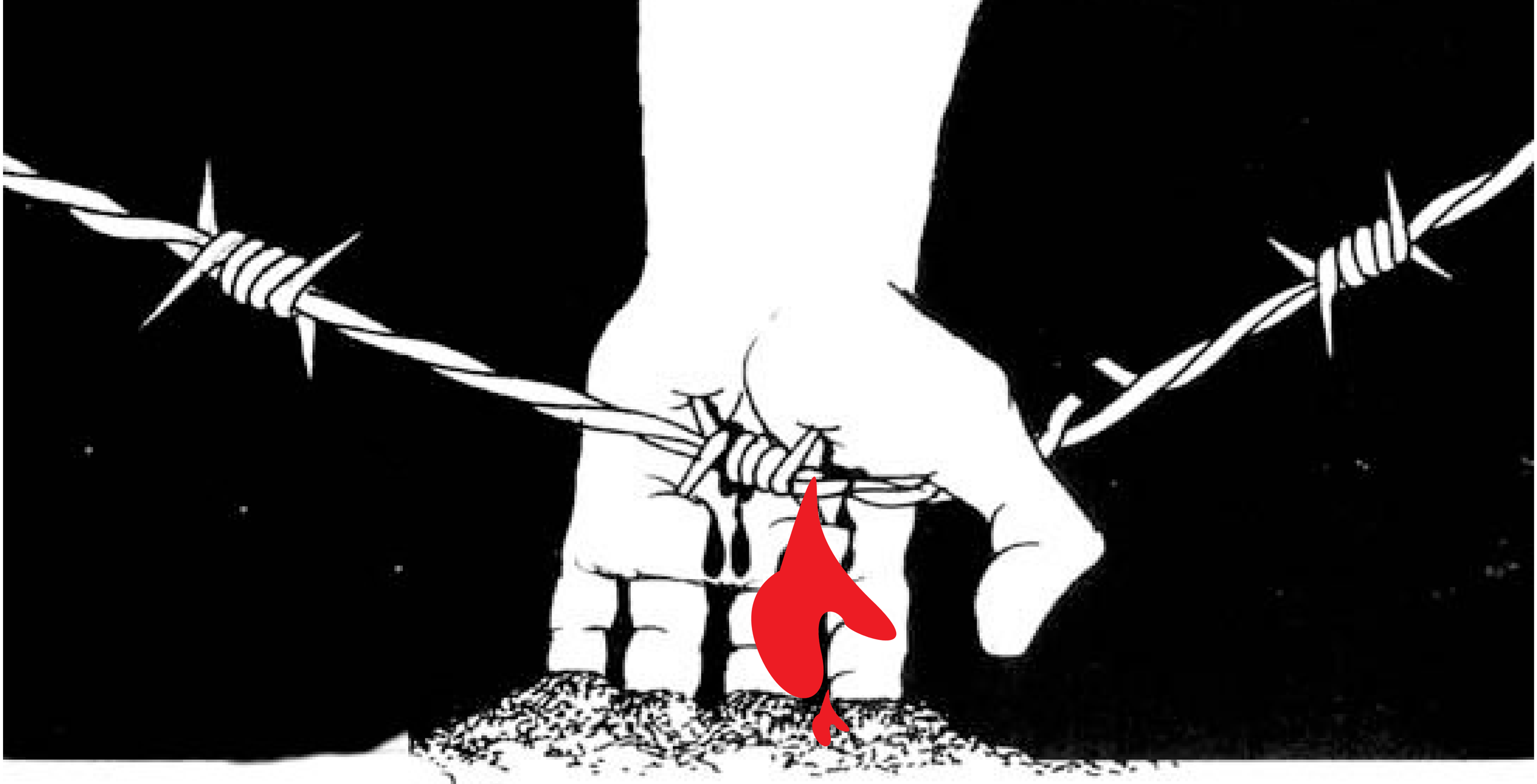

यदि जनबल पर विश्वास है
तो हमें निराश होने की
आवश्यकता नहीं है।

जनता की दुर्दम्य शक्ति ने,
फासिज्म की काली घटाओं में,
आशा के विद्युत का संचार
किया है। वही अमोघ शक्ति
हमारे भविष्य की भी
गारण्टी है।

– राहुल सांकृत्यायन

‘‘हमारे देश में धर्म के नाम पर कुछ लोग अपने हीन स्वार्थों की सिद्धि के लिए लोगों को लड़ाते–भिड़ाते हैं। धर्म और ईमान के नाम पर किये जाने वाले इस भीषण व्यापार को रोकने के लिए साहस और दृढ़ता के साथ प्रयास होना चाहिए।’’

‘‘एक तरफ जहाँ जन आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन हुए, वहीं, उनके साथ–साथ जातिगत और साम्प्रदायिक आन्दोलनों को भी जान–बूझकर शुरू किया गया क्योंकि ये आन्दोलन न तो अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ थे, न किसी वर्ग के, बल्कि ये दूसरी जातियों के ख़िलाफ़ थे।’’

गणेश शंकर विद्यार्थी

‘‘जब तक लोग
अपनी स्वतंत्रता
का इस्तेमाल
करने के लिए
ख़ुद कोशिश
नहीं करेंगे, तब तक
तानाशाहों का राज चलता रहेगा;
क्योंकि तानाशाह सक्रिय और जोशीले
होते हैं, और वे नींद में डूबे हुए
लोगों को ज़ंजीरों में जकड़ने के लिए,
ईश्वर, धर्म या किसी भी दूसरी चीज़ का
सहारा लेने में नहीं हिचकेंगे।

– वोल्तेयर

(फ्रांसीसी क्रान्ति के महान दार्शनिक)

राहुल सांकृत्यायन की आवाज़ सुनो

तर्क और ज्ञान

की मशाल लेकर आगे बढ़ो!

रूढ़ियों को

तोड़ डालो!!

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ में
- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 9892808704

वैकल्पिक नम्बर : 9619039793

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul